'जैन' जनपद लोक गीतों का महत्व और परिचय

डॉ. श्रीधर पी डी

सामान्य मानवी द्वारा अभिव्यक्त जो भी साहित्य है, उसे 'लोक जीवन साहित्य' या 'लोक साहित्य' के नाम से पहचाना जाता है। वेद, उपनिषदों के उगम के साथ ही लोक साहित्य का प्रारंभ हुआ था। भारतीय संस्कृति में निहित संपूर्ण पुराण साहित्य में लौकिक कथाओं की भरमार है। लोक कथा, लोक पुराण, लोकगीत, लोकवार्ता, लोक सभ्यता इस प्रकार अनेक बातों में 'लोक' का प्रत्यय लगाकर साहित्य को विशेष दृष्टि से देखा जाता है। इसे ही हम एक ढांचे में डालकर देखे तो लोक साहित्य का आंचल हमारे सामने प्रस्तुत होता है। शास्त्रीय साहित्य और लोक साहित्य में एक प्रमुख अंतर हमें देखने को मिलता है। वेद, उपनिषदों में जिन शास्त्रीय तत्वों का वर्णन हुआ है अथवा उनका विश्लेषण हुआ है, वह सारे किसी धर्म, किसी नीति और किसी संप्रदाय को उप सूचित करते हैं। मगर लोक साहित्य कैसा साहित्य है? जिसमें बोलचाल की भाषा में, गली, मोहल्ला, गांव और कस्बे में हम इसके रूप और प्रकारों को पहचान सकते हैं। लोक साहित्य एक अभिव्यक्ति का माध्यम है। यहाँ व्याकरण बद्ध शास्त्रीय विचारों की प्रस्तुतीकरण की आवश्यकता नहीं है। लोक साहित्य की रचना करने वाले या उसका प्रचार–प्रसार करने वाले समाज के उस वर्ग से संबंध रखते हैं, जिसमें कोई भी नीति–नियम लागू नहीं होते। लोक साहित्य का प्रस्तुतीकरण अहंकार से शून्य होकर एक अपनत्व की प्रवाह में निकल कर आ जाता है। इस प्रकार के सामान्य जनों के अभिव्यक्ति में जो तत्व मिलते हैं, उनको लोक साहित्य का दर्जा दिया जाता है।

सामान्यतः लोक साहित्य ज्यादातर मौखिक परंपराओं से निकलकर हमारे सम्मुख प्रस्तुत होती है। लोगों के बीच में निहित अलिखित परंपराओं से निकली हुई साहित्यिक सामग्री ज्यादातर मौखिक परंपराओं में ही परिचालित रहती है। लोक साहित्य साधारणतया रीति–रिवाज, विश्वास और प्रथाओं में सम्मिलित होती है। लोक संस्कृति का पूर्ण रूप लोक साहित्य है। लोक साहित्य साधारण तथा क्षेत्रीय भाषा में ही होती है। लोक साहित्य वैदिक काल से लेकर 'रामायण', 'महाभारत' महाकाव्यों होते हुए आज तक निरंतर चलती आ रही है। रामायण में नारद मुनि का लव और कुश के साथ और महाभारत में संजय का धृतराष्ट्र के साथ जितने भी संवाद उपस्थित हुए हैं, वह सभी गायन के रूप प्रस्तुत हैं। इस प्रकार का लोक साहित्य समाज–संस्कृति, रीति–रिवाज, संबंध–संस्कार, पर्व–त्यौहार, रूढिगत परंपरा आदि का मिश्रण होता है।

प्राचीन काल से लोक संस्कृति की लोक गाथाएं श्रव्य परंपरा से प्रचलित होते आ रहे हैं। वह अपनी युग की सभ्यता और संस्कृतियों को लेकर आगे बढ़ते हैं। लोक साहित्य का स्रष्टा सीधा–साधा और सहज वास्तविक स्थिति में विश्वास रखने वाला होता है। लोक साहित्य में धार्मिक और नैतिक भावनाओं का प्रचार–प्रसार होना लोक साहित्य का प्राण तत्व माना जाता है। संपूर्ण भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू धर्म ही होता है। लोक

साहित्य का रचनाकार प्रकृति के कण–कण को जानता है। सामान्यतः लोक साहित्य का रचनाकार धार्मिक भावनाओं से अनुशासित होता है। धार्मिक भावनाओं के कारण वह अनुशासित रहता है और आजीवन वह उन नीति नियमों का पालन करता है। लोक साहित्य विद्वानों, साहित्यकारों अथवा किसी पाठक को खुश करने के लिए नहीं लिखा जाता। लोक साहित्य उस कलाकार का अंतर मन होता है जो लोक साहित्य मानवीय मूल्यों का पारितोषिक होता है। उसी तरह जैन जनपद लोक साहित्य का भी भारतीय लोक साहित्य के क्षेत्र में देख सकते हैं।

जैन जनपद साहित्य का परिचय

लोक साहित्य को लोक गीत, लोक नृत्य, लोक कथा, लोक गाथा, लोकनाट्य, लोक संगीत के रूप में विभाजित किया गया है। उसी प्रकार जैन जनपद साहित्य को कथा, गीत, कहावत, लोकोक्ति, पहेलियां आदि रूपों में भी विभक्त किया गया हैं। जैन साहित्य में कहावत, लोकोक्ति और पहेलियों की मात्रा बहुत कम है, लेकिन कथा और गीतों का प्रभाव ज्यादा है। इसीलिए जैन जनपद साहित्य में गीतों का अध्ययन ही ज्यादा महत्व रखता है। कहीं–कहीं गीतों के द्वारा लोक कथाओं का विश्लेषण भी हुआ है। जैसे –

पद्यगीतों में – संस्कार और आचरण से संबंधित, यात्रा स्थल या मंदिरों से संबंधित, यक्ष और यक्षियों से संबंधित, ऐतिहासिक एवं पौराणिक व्यक्तियों से संबंधित, कार्य के गीत, मुक्त जीवि से संबंधित गीत आते हैं।

व्रतों और आचरण के गीतों में – संस्कार और आचरण से संबंधित, नित्य पूजा और व्रतों के गीत, विशेष पूजा और व्रतों से संबंधित गीत, विवाह आदि षोडश क्रियाओं से संबंधित गीत, जीवन विधान भावनाएं एवं मान्यताओं संबंधी गीत आते हैं।

यात्रा स्थल और जिन मंदिरों से संबंधित गीतों में – श्रवणबेलगोला से संबंधित गीत, होम्बुजा पद्मावती से संबंधित गीत, होम्बुजा और श्रवनबेलगोला से संबंधित गीत, स्थवनिधि से संबंधित गीत, अन्य जगहों में स्थित जिन मंदिरों से संबंधित गीत उपलब्ध होते हैं।

यक्ष और यक्षियों से संबंधित गीतों में – धरणेन्द्र और पद्मावती देवियों से संबंधित गीत, ग्रह कार्यों में धरणेन्द्र पद्मावती, कोलाट के पदों में धरणेन्द्र पद्मावती, आरती गीतों में धरणेन्द्र पद्मावती, कथन गीतों में धरणेन्द्र पद्मावती, प्रार्थना गीतों में धरणेन्द्र पद्मावती, ज्वालामालिनी से संबंधित जनपद गीत, ब्रह्मा और सरस्वती से संबंधित जनपद गीत आते हैं।

ऐतिहासिक पौराणिक व्यक्तियों से संबंधित जनपद गीतों में – मुक्त जीवियों से संबंधित जनपद गीत, आदिनाथ तीर्थंकर से संबंधित, नेमिनाथ तीर्थंकर से संबंधित, पार्श्वनाथ तीर्थंकर से संबंधित, बाहुबली स्वामी से संबंधित, अन्य तीर्थंकर और सिद्ध भगवानों से संबंधित जनपद गीत आते हैं।

गृह कार्यों के गीतों में – लोरी गीत, चक्की पीसते वक्त गीत, दान कूटते वक्त गीत आदि आते हैं।

जनपद साहित्य में उल्लेखित प्रमुख जगहों की जानकारी

'जैन जनपद साहित्य' के अध्ययन करते समय कुछ स्थलों का नाम बार–बार प्रस्तुत होता है। यह सारी जगह 'कर्नाटक' राज्य में ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से विख्यात हैं। इन जगहों की पहचान को हम ऐतिहासिक दृष्टि से जानेंगे तो हमें जैन जनपद के अध्ययन में विशेष पर्याप्त विषय उपलब्ध होते हैं। प्रमुख जगहों का नाम है। जैसे – होम्बुजा, श्रवणबेलगोला, सोदे, करूरु, हारिगे, स्थवनिधि, ऐनापुर, उगार, कुडुची, हाडुवल्ली, गेरुसोप्पे, पवित्र पहाड़े, गिरनार और सम्मेद शिखरजी आदि।

लोकगीतों के प्रकार

- संस्कार गीत
- व्रत गीत
- श्रम गीत
- ऋतु गीत

संस्कारों से संबन्धित जनपद गीत

'सं करोति' यानी संस्कृति का मूल अर्थ है उपयोग में लाना, अच्छा बनाना, साफ करना, अच्छे गुणों का पालन करवाना इस प्रकार के अनेक विधि नियमों को संस्कार कहा जाता है। प्रत्येक समाज और जाति प्रभेदों में जन्म से लेकर मृत्य तक और मृत्य के बाद भी विभिन्न प्रकार के आचरण और नीति नियम परंपरागत चलते आ रहे हैं। इन्हीं आचारणों के कारण मनुष्य को अपने मन, जीवन और ज्ञान के लिए संस्कार मिल जाते हैं। व्यक्ति के विकास के लिए आचरण, परंपरा, आस्था आदि की अपेक्षा होती है। मानव में अध्ययन, वातारण और परंपरानुसार संस्कारों का रूपांतरण भी होता है। इसी रूपांतरण के कारण उसके संस्कार उसके साहित्य में अभिव्यक्त होते हैं। जैन जनपद साहित्य में संस्कार क्रिया को अभिव्यक्त करनेवाले अनेक जनपद गीत उपलब्ध हैं। इनको संस्कार संबन्धी जनपद गीत नाम से जाना जाता है। इन जैन लोक गीतों को चार विभागों में देख सकते हैं।

1. व्रतों से संबन्धित
2. पूजा त्योहारों से संबन्धित
3. षोडश क्रियाओं से संबन्धित
4. आस्था, भावनाएँ, जीवन विधानों से संबन्धित

व्रतों से संबंधित जनपद गीत में – मानसिक दृढ़ संकल्प के साथ आत्मा को हित पहुंचाने के लिए करने वाली क्रिया का नाम ही व्रत है। जीवन में आत्म कल्याण सच्चा चरित्र का निर्माण करने के लिए व्रतों का पालन करना अनिवार्य हैं। जैसे आशाधरसूरी द्वारा रचित 'सागर धर्मावत' ग्रंथ में कहा गया है कि –

"संकल्पपूरक: सेव्यो नियमो शुभकर्मण:।
निर्वृत्तिर्वा व्रतं स्याद्वा प्रवृत्त: शुभकर्मण:।।"1

इसका अर्थ यह है कि – शुभ कर्म प्रवृत्तियों को संकल्पों द्वारा स्वाकीर करना और उन्हें संकल्पों के साथ निर्वहन करना ही व्रत कहा जाता है। इन्हीं संकल्पों द्वारा अशुभ कर्मों में जुड़े प्रवृत्तियों से दूर रहना भी व्रत कहा जाता है। अपने दैनंदिन क्रियाओं पर व्यक्ति या समाज और स्वयं अथवा परंपरा के अनुसार रूपित नीति–नियमों का स्थूल रूप से परिपालन करना ही व्रत कहा जाता है। व्रतों को हम दो रूपों में देख सकते हैं –

1. प्रत्येक दिनों में चलने वाले सामान्य व्रत
2. विशेष संदर्भ में चलने वाले विशिष्ट व्रत

प्रत्येक दिनों में चलने वाले सामान्य व्रतों का विश्लेषण

विश्व भर की सभी धर्मों में अनिवार्यता पालन करने वाले अत्यंत सरल और सुलभ कुछ नियम होते हैं। इन नियमों का पालन करना जीवन का एक अभिन्न अंग होता है। इन्हीं नियमों को हम नित्य जीवन से संबंधित व्रत कहते हैं। इन्हीं को हम सामान्य व्रत भी कहते हैं। जैन परंपरा में एक सामान्य प्रसिद्ध व्रत है रात्रि भोजन त्याग। उससे संबन्धित एक लोक गीत में इस प्रकार का वर्णन है –

"बसदीय बागिलिगे बिसिलु बंदल्लदे
मोसरु उणवल्लु जैनरु। तम्मय्य
चिक्कव्नु व्रतव नडिस्यानु।"2

इसका अर्थ यह है कि प्रति दिन सूर्यास्त से पहले ही आहार सेवन करना है। फिर से आहार सेवन करना है तो अगले दिन सूर्योदय होने तक प्रतीक्षा करना होगा। जैन परिवार में बड़ों के व्रत के साथ–साथ घर का छोटा भाई भी इस व्रत का पालन करता है यह कहना इस श्लोक का विशेष तात्पर्य है।

किसी व्यक्ति या स्थल को देखने या मिलने से पहले उनके लिए कुछ उपहार लेकर जाना भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। जैन परंपरा में इस पद्धति का वर्णन कुछ इस प्रकार किया गया है –

"अरहंतरिगोय्ये अरळु मल्लिगे हूव
गुरुगळिगेय्ये होस पिंछ। होम्बुचद
तायम्मगोय्ये नेनगडले। "3

अरहंत भगवान के दर्शन के लिए अरळु (भुना हुआ चावल) मल्लीगी फूल लेकर जाना (भगवान के अभिषेक में इन दोनों का उपयोग करते हैं) और गुरु के दर्शन के लिए नया पिंछी लेकर जाना है। याद आते ही होम्बुज पद्मावती देवी का दर्शन करने के लिए जाना है। इस वर्णन में जैन संसारी व्यक्ति जिसको श्रावक कहा जाता है उसका चित्रण है। मंदिर जाते समय श्रावक का चित्रण इस पंक्ति में नज़र आता है।

पिंछी और मंदिर की स्वच्छता का वर्णन – पिंछी यानी जैन साधु उठते – बैठते वक्त जीव हानी न हो इस उद्धेश्य से मोर के पंखों से बना जाडू जैसे गुच्छ का जीवन भर उपयोग करते हैं। कमंडलु और पिंछी मात्र ही जैन साधुओं का संपत्ति माना जाता है। जैन जन पद गीतों में मंदिर की स्वच्छता का भी विशेषा महत्व है। उसी को जैन धर्म के श्रेष्ठ संत मुनि श्री 108 शांतिसागर जी बीसवीं सदी में पाप रहित धर्म का प्रचार प्रसार करते समय निम्नलिखित पद में उल्लेख किया गया है।

"बसदी बागिल मुंदे कसविल्ल
कड्डिडल्ल बस्तियाग
गुरुगळ शांति सागर कैयाग पापिल्लद नविलगरिगळ हिडुकोंडु
पापिल्लद धर्मव तिळिस्यार।"4

उपरोक्त पद में जैन मंदिर की स्वच्छता जैन साधु की सरलता और जैन धर्म की श्रेष्ठता का वर्णन के साथ जैन साधुओं के अलंकार पिंछी का भी वर्णन है। जैन मुनि हिंसा के बिना इकट्ठे की गई मोर के पंखों का पिंछी का उपयोग करते हैं।

अहिंसा जैन धर्म का मूल तत्व है। इस व्रत का पालन करने के लिए ही जैन धर्मी दूध और पानी को छानकर ही उपयोग करते हैं। जैन धर्मावलंबी इन कार्यों को व्रतों के समान परिपालन करते हैं। आगे कहते हैं कि इन धर्मों का पालन स्वर्ग को अपने आंगन पर ला देता है। निम्नलिखित पद में इसका वर्णन है –

"हालु सोस मगळे नीरु सोस
जिनर धर्मदल्ली नडी मगळ अंदर
स्वर्ग बंदीत निन्न अंगळक।"5

सत्य वाक्य परिपालन करना जैन धर्म का एक और तत्व है। जैन धर्म में उपनयन या व्रतोपदेश होता है तो पंचाणु व्रतों का उपदेश करते हैं। इसमें मकार त्याग (मधु, मांस और मध्य) के त्याग करने के साथ रात्रि भोजन त्याग की विशेषताओं की जानकारी दी गई है। साथ ही पाँच औदुंबर फलों का त्याग करते हुए अपने संपूर्ण जीवन में इन व्रत का पालन करने का विवरण प्राप्त होता है।

अपनी आत्मा के सामने किसी को भी सच बोलना ही पड़ता है। झूठ तो नहीं बोल सकता। विवाह के समय पुरुष को छेड़ने के लिए पूछा जाता है कि आप भगवान के सामने प्रमाण करके बतला कि तेरे मन में क्या है –

"सूळ्येर केरिगे होगिद्दु भाव
सुळ्ळेनु भाव बद्देनु भाव?
हारिगी बस्तीगि होगाने भाव
दीपानादरु हच्चने भाव
कायनादरु ओडियने भाव
कैयनादंरू मुगियने भाव
सत्य नुडि भाव....." 6

इस प्रकार विभिन्न जैन मंदिरों का नाम बताते हुए सत्य वचन परिपालन करने के लिए इस लोकगीत की रचना की गई है। जैन धर्म की विशिष्टता के रूप में माने जाने वाले सत्य, अहिंसा और रात्रि भोजन त्याग जैसे नियमों का वर्णन उपरोक्त लोक गीत में हुआ है।

विशिष्ट जैन व्रतों का विश्लेषण

सामान्य रोजमर्रा की जिंदगी से संबंध ना रखने वाले कुछ निर्दिष्ट पर्व–त्यौहार के दिनों में आचरण में गाए जाने वाले तथा स्वीकार करने वाले अथवा जीवन पर्यंत स्वेच्छा से आचरण हेतु स्वीकार करने वाले व्रतों को ही विशिष्ट व्रत कहा जाता है। साधारण तथा जीवन का सहज गुण मोक्ष की साधना है। इसका मतलब ऊर्ध्वगमन ही जीवन का मूल तत्व है। संपूर्ण मानव का प्रयत्न इसी दिशा में चले, इस बात को धर्म नियम और मार्गदर्शन के रूप में सूचना प्रदान करता है। धर्म के बताए हुए इस रास्ते पर चलना अत्यंत कठिन कार्य है। पंच इंद्रियों को अपने वश में कर, मोह त्याग के लिए सामान्य रोजमर्रा की जिंदगी ना होने वाले आचरण के लिए नियम ना होने पर भी स्वयं नियमों को मानकर शास्त्र द्वारा सुझाए हुए विधियों का पालन करता है। इन्हीं श्रावकों द्वारा विशेष से स्वीकृत आचरणों को विशिष्ट व्रत कहा जाता है।

कभी–कभी जैन श्रावक कुछ संकल्प कर लेता है। इन दिनों में मैं इस प्रकार के आहार का सेवन नहीं करूंगा। देव आराधना या सेवा का कार्य होने तक इस प्रकार का काम मैं नहीं करूंगा। इस प्रकार का आहार मैं स्वीकार नहीं करूंगा। विशिष्ट व्रतों के क्रमांक में 'अष्टह्निक पर्व और दशलक्षण पर्व' विशेष मान्यता रखते हैं। इनके साथ अनेक प्रकार की नोंपियों का आचरण करते हैं। विशेष प्रकार के आचरण का मूल उद्देश्य होता है की जैन धर्मावलंबियों का आत्म कल्याण। इन व्रत और नोंपियों के आचरणों में उपवास रखना सामान्य है। कभी–कभी कुछ तीर्थ क्षेत्रों का दर्शन करने हेतु श्राविका यानी जैन धर्माचारण करनेवाली स्त्री नियम और उपवास जैसे नियमों को

पालन करती हैं। स्वयं साथ–साथ उपवास रखते हुए दूसरों को भी इन नियमों के द्वारा आत्म कल्याण करने हेतु प्रेरणा प्रदान करते हैं।

उदाहरण के लिए श्रवणबेलगोला जाने से पूर्व कुछ नियमों को रखकर परिवार को अपने साथ ले जाने के लिए भी प्रेरणा देनेवाले विचारों का निम्नलिखित लोक गीत में वर्णन किया गया है –

..... बिसिलु सुड्डुवुदेंदु मरदडी नित्तीरी
नित्तरे पाप निमगिहुदु
स्वामी जय जया अरहंत नेमी जय जया।।
ओडवे इद्दवरु ओडवे हंबल बिडी
ओडवे ओप्पिसिरो पररिगे। बेळ्ळुगुळद
मस्तकव नोडी बरुवंक।।
मक्कळिद्दवरु मक्कळंबल बिडी
मक्कळोप्पिसिरो पररिगे।
मस्तकव नोडी बरुवंक।।
निस्तेरु नीवीग ब्यारोंदे व्रत माडी
हालु होळिगे रता माडी। बेळ्ळुगुळद
स्वामीय नोडी बरुवंक।।
नार्येरु नीवीग मत्तोंदु व्रत माडी
एण्णे गज्जयव रत माडी। बेळ्ळुगुळद
मस्तकव नोडी बरुवंक।। 7

उपरोक्त गीत में जैन धर्मी गृहस्थी यानी श्रावक श्रवणबेलगोला जाकर आने तक देह को सुख न देना, गहनों का अलंकार न करना, मोह से दूर रहकर अपने पत्नी और बच्चों से दूर रहना, मन और जीब के लालच से दूर रहने के लिए होलीगे और तेल में तलने वाले मीठे पकवानों को त्याग करने जैसे विशेष व्रतों को स्वीकार कर परिपालन करने का उल्लेख है।

दीक्षा गीत

आत्म जागृति उन्नत अवस्था के स्तर पर जाकर मुक्ति की इच्छा तीव्र होने पर अपनी साधना की तीव्रता को और तीक्ष्ण बनाने हेतु व्यक्ति अपनी साधना पथ पर एक उग्र व्रत का आचरण स्वीकार कर लेता है। मगर जैन धर्म में सन्यास को स्वीकार करना और उन नियमों का पालन करना अत्यंत कठिन है। इसलिए इन्हीं कारणों को

सामने रखकर माता पिता या बंधु बांधव जैन सन्यास स्वीकार मत करो और दीक्षा धारण मत करो ऐसे कहते हैं। दीक्षा मुख व्यक्ति को जैन धर्म में निहित उग्र व्रत के विषय में इस निम्नलिखित लोकगीत में विश्लेषण करते हैं।

नेत्ती कूदलु बेरागडी कीळुवाग
हेत्त होट्टेली उरूलावो। कंदय्य
नी होगब्याडो जिनदीक्षे।

आप्पोत्तुपवास ओंदे मग्गुल निद्रे
ताळलारे मगने जिनदीक्षे। उज्जंतगिरिगे
ब्याडकणो जिनदीक्षे।

आप्पोत्तिनूटके उप्पुबिडवलु बेकु खार बिडुवलु बेकु
ताळलारे मगने उपुवास। उज्जंतगिरिगे
ब्याडकणो जिनदीक्षे।

कैयगी नुंगुल तगुद्रे, सोंटद दार तगुद्रे
पन्नेय कूद्ल तगुदारे। अव्व केळे
अण्णय्यगु बंद्र जिनदीक्षे।

कालीग्हावीगे तोट्रे कैयली कुंचिगी हिडुद्रे
अण्णय्यगु बंद्र जिनदीक्षे। अंद्हेळी
तंगीदीरतिय होरुळ्यारे। 8

दीक्षा समय उनके माता–पिता बहन परिवार वाले दीक्षा ग्रहण के संदर्भ में होने वाले विधि नियमों को विस्तृत रूप से चित्रित कर उससे होने वाले दुख असुविधाओं का वर्णन करते हैं।

दीक्षा लेने के बाद पालन करने वाले नियमों का वर्णन

1. केश लोचन
2. दिन में एक बार आहार स्वीकार करना
3. एक ही स्थिति में करवटें न बदलते हुए सोना

4. नमक और मिर्ची छोड़ देना
5. सभी प्रकार के अलंकृत वस्तु और कपड़ों को छोड़ देना
6. लकड़ी से बने जूतों को पहनकर चलना
7. घर और धन को छोड़ना होगा
8. वीर पुरुष के हाथ में कमंडल थमाया जाएगा
9. माता पिता और परिवार के सभी संबन्धों से मुक्त होना पड़ेगा
10. ब्रह्मचर्य दीक्षा का पालन करना होगा
11. सांसारिक सभी सुखों से विमुक्त होना होगा
12. महाव्रतों का पालन करना होगा

इतने सुखों का वर्णन और दु:खों की कठिणताओं के विश्लेषण के बाद भी जिनदीक्षा इच्छुक व्यक्ति को कोई भी आकर्षण विमुख नहीं कर सकता है। अंत में दीक्षा लेने वाले को अलंकृत कर विधि विधानों के साथ उनकी पूजा सहित सब परिवार और समाज मिलकर दीक्षा के नियमों को संपन्न करवाते हैं। अंत में दीक्षा के श्रेष्ठता को पहचाने जाने वाले श्लोक प्रस्तुत किया गया है।

जिन दीक्षा लेनेवाले का कथन

"उप्परिगे मनि ज्वाके कोप्पुरिगे होन्ने ज्वाके
तायम्म नी ज्वाके मनि ज्वाके। उज्जंतगिरिगे
इंदु कंदय्य जिनदीक्षे।। –

दीक्षा के बाद परिवार का कथन

एष्टु हेळिदरु केळलिल्ल कंदय्य
ईंदु होरटानव्य होर पयण। उज्जंतगिरिगे
इंदु कंदय्य जिनदीक्षे।।"

दीक्षा विधि किस प्रकार चला इसके बारे में भी वर्णन है।

कैयगिनुंगुल तगुद्रे सोंटद दार तगुद्रे
पन्नेय कूद्ल तगुदारे। अव्व केळे
अण्णय्यगु बंद्रे जिनदीक्षे। अंद्हेळि
तंगीदीरतिय होरुळ्यारे
आरु मारुद्धन कूद्ल बेरळेत्ति कीळाग

तायम्मन होट्टे उरुलावु। मुक्तीगरिली

इंदु कंदय्न जिनदीक्षे। 9

उपरोक्त पदों में दीक्षार्थी को राजकुमार जैसे अलंकृत कर प्रदक्षिाण करवाते हैं। वही अलंकृत व्यक्ति दीक्षा के बाद त्यागी के रूप में परिवर्तित होता है, इन विचारों का वर्णन किया गया है। दीक्षा के बाद उस त्यागी को राजा महाराजा समेत समाज के सभी जन आदरसहित सम्मान एवं वंदना करते हैं।

जैन धर्मावलंबी नोंपी नामक विशेष व्रतों का पालन एवं आयोजन करते हैं।

अनन्त नोंपी का गीत –

हरिगे बस्तीली हालांत अभिसेक

अनंतर नोंपी बेळतंक। नेमीश्वरगे

नूरेंटु कळसदभिषेक।

नंदीश्वर नोंपी का गीत –

बस्ती बागल मुंदे मंद्याक मक्कळ्याक

नंदीकोल्याक नविल्याक। अण्णय्य

नंदीश्वर नोंपी मुगिस्यान। 10

उपरोक्त विशिष्ट व्रतों को सामान्यतया गुरु उपदेश के साथ लिया जाता है।

लोक गीतों में गुरु द्वारा देने वाले व्रतोपदेश को एक लोक गीत में कहा गया है कि, सुहागन भगवान की देन है, मायके वाले नाक का आभरण नत देते हैं, ऐसे ही गुरु व्रतों का उपदेश देते हैं।

व्रत – पूजा और त्योहारों के संदर्भ के जनपद गीत

जीवन के विशेष संदर्भों में, कुछ अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने हेतु अथवा अपनी इच्छाओं को जिन धर्मानुसार दमन करने के लिए विशेष व्रत और मन्नतों को रखकर पालन करते हैं। जैन धर्मावलंभी को जीवन भर षट्कर्मों का पालन करना चाहिए। इनका नाम हैं – देवपूजा, गुरुवंदना, अध्ययन, संयमाचरण, तप या ध्यान, और दान। देव दर्शन करते समय, पूजा के समय शंकाकार में चावल रखकर उसके साथ फल–पुष्पों को समर्पित करते हैं। इस प्रथा को जैन धर्मावलंबी पुंज कहते हैं। अहिंसा धर्म में आस्था रखने वाले श्रावक–श्राविका सकल जीव जंतु से प्रेम रखते हुए भगवान से प्रार्थना के साथ फल–पुष्पों को समर्पित करते हुए मंदिर की प्रदक्षिणा करते हैं। इस प्रकार जैन संस्कृति और परंपरा में अनेक संदर्भों से संबन्धित लोक गीत प्राप्त होते हैं। जैसे –

- होमबुज में पूजा विधि विधान के बारे में हुमचा यात्रा महोत्सव का वर्णन
- श्रवणबेलगोला बाहुबली भगवान की पूजा के गीत
- पूजा के साथ अष्टविध अर्चना वर्णन करने वाले गीत

- होबुज जात्रा महोत्सव का वर्णन गीत
- षोडश क्रिया से संबंधित गीत
- नामकरण संबंधी षोडश लोकगीत
- विवाह के लोकगीत
- सपने के गीत
- मान्यताएं और जीवन विधान से संबंधित गीत
- तीर्थ क्षेत्र से संबंधित गीत
- जनपद यक्ष और यक्षियों के गीत
- आरती गीत
- विवाह एवं शुभ कार्यों के गीत
- प्रथा एवं जीवन विधान से संबन्धित गीत

विश्वभर में अहिंसा प्रधान कोई धर्म है तो वह जैन धर्म ही है। जिसमें सरल जीवन से मुक्ति तक कर्म सिद्धांत के आधार पथ पर अग्रसर होने का मार्गदर्शन प्राप्त होता है। इसी श्रेष्ठ जीवन दर्शन को स्पष्ट रूप से जैन जनपद लोक गीतों में देख सकते हैं। सत्य और अहिंसा पथ में चलने वाले रीति नियमों को जैन जन पद गीतों द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

जैन जनपद लोक गीतों में सामान्य मानवी के लिए लोरी गीत, होली के गीत भी उपलब्ध होते हैं तो मुक्त जीवों के लिए सभी तीर्थंकरों के जीवन के प्रेरणादायक कथागीत उपलब्ध होते हैं।। ज्यादातर गीत त्रिपदी छंद में उपलब्ध हैं। इन गीतों में तीर्थंकरों के जीवन के स्वारस्यपूर्ण संदर्भों का वर्णन भी है। जनपद गीतों में जैन दर्शन के मूल अंश प्राप्त होते हैं। इनमें मन्नत मांगना, शगुन पर आस्था रखना, सामान्य जन जीवन शैली, जागरूक जीवनयापन, धर्म रीति नीति व्रत ध्येय नियमों का पालन, ग्राम देवताओं के साथ तीर्थंकरों की पूजा आदि प्रकार विभिन्न लोक गीत प्राप्त होते हैं।

जैन लोक काव्य सौंदर्य की दृष्टि से देखा जाय तो खण्डकाव्य और महाकाव्य विरल हैं। जो उपलब्ध हैं वे सभी कथन गीत के रूप में, अनुभव गीतों के रूप में, उपमेय और उपमानों के साथ जीवन दर्शन कराते हैं। इन लोक गीतों में उक्ति प्रदान होने पर भी अन्योक्ति और श्लेष अलंकारों का भरमार हैं। जैन जनपद गीतों में प्रादेशिक कन्नड़ साहित्य प्रकार दासपद और यक्षगान प्रकारों का प्रभाव दिखाई देता है।

आधार ग्रंथ सूचि

1. भाद्रपद मासक्के संबन्धिसिद जैन व्रत पूजा विधि, डी. पद्मनाभ शर्मा, पृ.सं. 3
2. जैन जनपद साहित्य संपादने मत्तु अध्ययन, डॉ. एस. पी. पद्मप्रसाद, पृ.सं . 28
3. जैन जनपद साहित्य संपादने मत्तु अध्ययन, डॉ. एस. पी. पद्मप्रसाद, पृ.सं . 29
4. जैन जनपद साहित्य संपादने मत्तु अध्ययन, डॉ. एस. पी. पद्मप्रसाद, पृ.सं . 30
5. जैन जनपद साहित्य संपादने मत्तु अध्ययन, डॉ. एस. पी. पद्मप्रसाद, पृ.सं . 31
6. कर्नाटक के शिमोग्गा जिला के सागर में जैन मंदिरों में पूजा के समय इस गीत को गाया जाता है।
7. जैन जनपद साहित्य संपादने मत्तु अध्ययन, डॉ. एस. पी. पद्मप्रसाद, पृ.सं . 34 और 35
8. जैन जनपद साहित्य संपादने मत्तु अध्ययन, डॉ. एस. पी. पद्मप्रसाद, पृ.सं . 33
9. जैन जनपद साहित्य संपादने मत्तु अध्ययन, डॉ. एस. पी. पद्मप्रसाद, पृ.सं . 39
10. नोंपिय कतेगळु, हंप. नागराजय्य प्रस्तावना में पृ.सं . 2

डॉ. श्रीधर पी डी, विभागाध्यक्ष्य, हिन्दी अध्ययन विभाग
क्रिस्तु जयन्ती कालेज, के. नारायणपुर, कोत्तनूर पोस्ट, बेंगलूरु–560077
Email.sreedharpd@kristujayanti.com, Phone- 9448123187